रात्रिक्लास 27/4/68 ओमशान्ति

बहुत खुशी होनी चाहिए। बेहद के बाप से तुम पदमा–पदमभाग्यशाली बनते हो। दुनियां जानती ही नहीं भगवान पढ़ा सकते हैं। यहां तुम पढ़ते हो तो कितनी खुशी होनी चाहिए। हम ऊँच ते ऊँच जाने लिए पढ़ रहे हैं। कितना फराक दिल होना चाहिए। बाप के ऊपर तुम कर्ज़ चढ़ाते हो। ईश्वर अर्थ देकर कर्ज़ चढ़ाते हो। फिर दूसरे जन्म में उसका रिटर्न लेते हो। बाबा को हमने सभी कुछ दिया तो बाप को भी सभी कुछ देना पड़ेगा। क्या मैं भूख मरता हूँ? जो भी बच्चे हैं भल काम न भी करते हैं तो भी भूख तो नहीं मरते। उनके सिर जमा होता जाता है। शिवबाबा को दिया यह कब ख़्याल में न आना चाहिए। बहुतों के अन्दर चलता है। हमने इतना दिया हमारी खातरी क्यों नहीं होती है? अरे, मुट्ठी दिया है ,खाते भी हो ना, कि रखा होगा। काम न करते हैं तो खाते–2 खलास कर देते हैं। बाकी बचा ही क्या? वह नशा ख़त्म हो जाता। पैसा देते हो। दिल जानती है हम तो बाबा से विश्व की बादशाही ले रहे हैं न। बाप तो दाता है ना। राजाएं बड़े ही रॉयल होते हैं। पहले–2 जब मुलाकात होती है तो हम नज़राना देते हैं तो वह कब हाथ में नहीं लेते। इशारा करेंगे पर्सनल सेक्रेट्री को। हाथ में लेने का कायदा नहीं है। तो शिवबाबा जो दाता है वह कैसे लेंगे? यह तो बेहद का बाप है। उनके आगे नज़राना रखते हो; परन्तु जानते हो (ब)ाबा तो ढेर देंगे। तो देने का कब भी संकल्प भी न आना चाहिए। हम तो लेते हैं। वहां पदमपति बनेंगे। तुम प्रैक्टिकल में पदमा–पदमभाग्यशाली बनते हो। सन्यासी घर–बार छोड़कर भी आकर घर में बैठते हैं। तुम बच्चों को समझाना चाहिए अपने हमजिन्स को। निवृति मार्ग वालों को गुरू बनाया है। वह तो आरफन बनाते हैं। उनके तुम पांव चूमते हो। लज्जा नहीं आती? तुम्हारे हमजिन्स को आरफन बनाकर जाते हैं। बच्चों को बहुत खड़ा होना चाहिए। क(ई) बड़े फ़राक दिल। कई मनहूस होते हैं। समझते नहीं बाप हमको पदमापति बनाते हैं। हम बहुत ही सुखी बनते हैं। जब परमात्मा बाप गैरहाज़िर है तो इनडायरैक्ट अल्पकाल के लिए फल देते हैं। जब हाज़िर हैं तो 21 जन्म लिए देते हैं। यह तो गाया हुआ है शिव का भण्डारा भरपूर। ढेर बच्चे हैं। किसको पता थोड़े ही है कौन क्या देते हैं। बाप और बाप की गोथरी ही जाने। जिसमें रहते हैं। है साधारण। यहां से बाहर निकलते हैं और सारा नशा खलास। बाबा बहुत ही डिप्लोमेट है। ज्ञान और योग नहीं है तो सारा दिन खिट–2 चलती रहती है। अच्छे–2 बच्चों को भी कोई न कोई बात में हराती ही रहती है। माया बेमुख बहुत करती है। शिवबाबा जिसके पास आते हैं उनको तुम याद नहीं कर सकते हो। अन्दर में अथाह खुशी होनी चाहिए। वह दिन आया आज.....जिसके लिए कहते थे आप आवेंगे तो हम आपका ही बनेंगे राज–भाग लेने लिए। भगवान आकर एडॉप्ट करते हैं। कितना खुशनसीब कहेंगे। बाप एडॉप्ट करते हैं तो कितनी खुशी होती है; परन्तु कोई–2 तो एडॉप्ट बच्चे भी बड़ा तंग कर देते हैं। बाबा तो

अनुभवी है ना सभी बातों का। साधारण बाप समझ भूल न जाना चाहिए। बच्चों को तो बहुत ही खुशी होनी चाहिए। यह तो समझाया है बाबा अनुभवी है। धंधे आदि की राय दे देवे। शिवबाबा तो कहते हैं मैं आता हूँ पावन बनाने लिए। कहां यह राय दे सकते हैं; परन्तु ऐसे नहीं जैसे गुरू की राय मिलती है। नहीं। यह तो सम्बंधी है ना। सभी व्यापार किये हैं। अनुभवी तो है ना। आजकल गवर्मेन्ट का भी ठिकाना नहीं। सारी चाभी बड़े–2 ऑफिसरों के हाथ मे है। पहले से ही भाव आदि बना देते हैं। सारा दिन इन धंधों में ही बुद्धि लगी रहती है। सो भी मीठे–2 बच्चे जानते हैं बाबा आया है, दुनियां को बदल कर ही छोड़ेंगे। कल्प–2 दुनियां बदलती है। बाकी थोड़े ही रोज़ हैं। धैर्य धरो। कर्मों का हिसाब–किताब बड़ा कड़ा है। व्यापार आदि में भी हल्के हो जाओ जो बुद्धि लटक न जाये। बाबा ने छोड़ दिया। व्यापार कितना भी फायदे का था; लेकिन बाबा से बेहद की बादशाही मिलती है तो हम वह क्या करेंगे? टाइम बहुत थोड़ा..... बॉम्ब्स आदि कोई न कोई चीज़ निकालते ही रहते हैं। ऐसे न समझना चाहिए बहुत समय

रहना है। तैयारी हो रही है। तुम बच्चों के लिए ठहरे हुये हैं। बच्चों की परिपक्व अवस्था हो जाये तो लड़ाई लगी कि लगी। बाबा ने समझाया है दिन–प्रतिदिन टाइम बीतता जाता है। आज फलाना दिन, फलाना मास, फलाना संवत, कल दूसरा। तुम तो कहेंगे अभी संवत होगा 4900। बाकी कितना है। तो इस समय पवित्र रहना अच्छा है। छोटे बच्चे वर्सा ले नहीं सकते। टाइम थोड़ा होता ही जाता है। पुरानी दुनियां ख़त्म होनी है नई दुनियां के लिए तैयारी करनी है। तुम संगमयुग पर पुरुषार्थ करते रहते हो तो अटेन्शन दो। कहां–2 से बच्चे आते हैं। वहां तो हंस जो बगुलों के झुण्ड में जाते हैं। यहां के सात/आठ रोज़ भी तुम्हारी बहुत कीमती है। यहां नशा चढ़ा ही रहता है। हम बापदादा के पास रहते हैं। इनसे ऊँच परिवार होता नहीं। ऊँच ते ऊँच है ही ब्राह्मणों का परिवार। बच्चों को अथाह अपार खुशी होनी चाहिए। बुद्धि से काम लो। जिसको ऊँच ते ऊँच बाप पढ़ाते उनको खुशी का पारा कितना चढ़ा रहना चाहिए। जानते हैं बाबा तो हर 5000 वर्ष बाद आकर हमको पढ़ाते हैं। माया खुशी का पारा गँवाये देती है। बाप तो काई तकलीफ नहीं देते। सिखलाते हैं ऐसे है कोई मेहनत नहीं । याद में रहो तो आत्मा को बल मिलेगा। देवताएं भी ब्राह्मणों के भोजन को याद करते हैं; क्योंकि तुम बाप से योग रखते हो। देवताएं थोड़े ही बाप से योग रखते हैं। तुम ब्राह्मण ही ऊँच हो। यह कोई भी नहीं जानते। बाप जीते जी मरने की युक्ति सिखा कर जाते हैं। वापस तो जाना है सभी को। सभी पतित हैं। पावन बनने बिगर जा नहीं सकते; इसलिए पतित–पावन को बुलाते हैं; क्योंकि पावन दुनियां में होते ही थोड़े हैं, जो पावन बनते हैं। बाकी तो जो पावन नहीं बनते वह ख़त्म हो जावेंगे। बाप आते हैं इतने सभी 50... करोड़ को विनाश करने। पतित–पावन को बुलाते ही हैं हमको पावन बनाकर नई दुनियां में ले चलो। तो आत्माएं ही जावेंगी ना। सतयुग में होते ही है थोड़े। बाकी इतने करोड़ मनुष्य विनाश हो जाते हैं। शंकर द्वारा विनाश नहीं। बॉम्ब्स और नैचुरल कैलेमिटीज़ से विनाश होना है। तुम बच्चों को याद से सतोप्रधान बनना है। जितना पावन बनते हो उतना ऊँच पद पावेंगे। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार , गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते। माया बहुत प्वाइन्ट्स से हरा देती है। काम की प्वाइन्ट से तो की कमाई चट हो जाती है। लोभ से, क्रोध से की कमाई चट नहीं होगी। काम महाशत्रु है तो एकदम तुमको गिरा देती है। क्रोध तो सेकण्ड नम्बर दुश्मन है। इनसे तुम पतित नहीं बनते हो। क्रोध का हल्का भूत है। काम बड़ा ही भारी भूत है। उन पर ही जीत पानी है। काम पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे। लक्ष्मी–नारायण जगत जीत थे ना। तो तुमको भी इन जैसा जगत जीत बनना है। अच्छा, ओम।